महाभारत में स्त्री

लेखक :
डॉ० कृष्ण मोहन

Q23:21x1
KRI
979 A.D.

किशोर विद्या निकेतन
भदवी, वाराणसी

Ⓒ 23:21x.1
KRI
1979.A.D

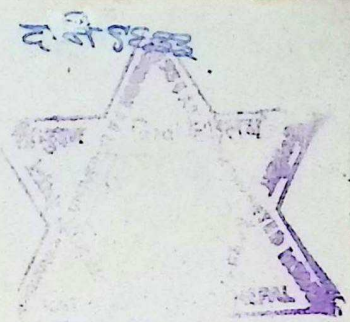

अनिवार्य आरक्षित

भारतीय विद्या प्रकाशन
चौकोगली, वाराणसी

महाभारत में रुद्र

लेखक :
जी० कृष्ण सेनन

किशोर विद्या निकेतन
भदैनी, वाराणसी

© लेखक १९७९
मूल्य: २५.००

प्रकाशक: नन्द किशोर द्विवेदी
किशोर विद्या निकेतन
भदैनी, वाराणसी,

मुद्रक: राजकुमार जायसवाल
मानव मन्दिर मुद्रणालय
१४०, अगस्तकुण्डा, वाराणसी।

कालातीत महाकाल

देवाधिदेव भगवान कपर्दिन श्री रुद्र

के चरणों में समर्पित

—लेखक

छात्रवृत्ति परिवादक

एवं शिक्षा मासिक पत्रादि प्रतियोगिता

परीक्षाफल की विज्ञप्ति की

प्रति----

अमर वाणी

पिनाकगोपत्रये सूर्याय मङ्गल्याय च वेध से
प्रसादये त्वाम् भगवन सर्वभूत महेश्वरः ॥ ७८ ॥

पिनाक रक्षक सूर्य स्वरूप मंगलकारक और सृष्टिकर्ता आप परमेश्वर को नमस्कार है। भगवन् ! सर्वभूत महेश्वर मैं आपको प्रसन्न करना चाहता हूँ। (वनपर्व में अर्जुन की स्तुति—३८ अध्याय ७८ श्लोक)

तरंगांकित केशाय मुञ्ज केशाय वै नमः
नमः षडकमर्तुष्टाय त्रिकर्म निर्ताय च ॥ १०६ ॥

आपके केश गंगा की तरंगों से अंकित तथा मुंज के समान हैं, आपको नमस्कार है आप ब्राह्मणों के षडकर्म अध्ययन-अध्यापन, भजन-भाजन तथा दान एवं पतिग्रन से संतुष्ट रहते हैं। स्वयं भजन अध्ययन और दान तीन कार्यों में ही निरत रहते हैं। आपको मेरा प्रणाम है। (शान्तिपर्व में दक्ष की स्तुति)

अहं ब्रह्म कपिलोयो प्यनन्तः
पुत्राह शर्वे ब्रह्मण श्रृवा निवीराः
तवतः सर्वे देव देव प्रसूता
एवं सवेशः कारणात्मा त्वमी यः ॥ ३९ ॥

देव-देव, मैं ब्रह्म, कपिल, शेषनाग और अग्निदेव शत्रुओं पर विजय पाने के कारण अत्यन्त वीर (जनक आदि) सखी ब्रह्मपुत्र आपके द्वारा ही उत्पन्न हुए हैं। इस प्रकार आप सबके ईश्वर और कारणमय होने के कारण स्तुत्य हैं। (हरिवंश के विष्णु पर्व में ७४ अध्याय ३४ श्लोक में श्रीकृष्ण द्वारा शिव की स्तुति)

(अथ कवित्त)

कवित्त है । (दोहराव के लिये दस या सत्रह से अधिक तेरह से अधिक तेरह ही अक्षर हों । यह मात्रिक छन्द है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में अक्षरों की संख्या एक समान होती है । इसमें) आठ, चार और एक-एक अक्षर पर यति होती है । इसके अन्त में लघु-गुरु हों अर्थात् अन्त में दो अक्षर हों ।

उदा० अरुनोदय होत भयो उठि कै नँदलाल ।
बदन पखारन कौं चले जमुना जल तत्काल ।
तिनके पाछे ग्वाल सब करत कुलाहल जात ।
बृंदाबन की सोभ सबै मन मोहति अवदात ।

(अथवा या कवित्त के लिये—इस प्रकार कह सकते हैं ।)

अथवा । कवित्त । कवित्त मात्रिक छन्द है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में सोलह और पन्द्रह के क्रम से इकतीस मात्राएँ होती हैं । अन्त में लघु-गुरु होना आवश्यक है ।

उदा० बसन बिहीन बिलखाते बालकों को देख
दया से दयालु द्रवीभूत होता है कौन ।

अपनी बात

इतिहास के वातायत से अतीत का मूल्यांकन करना सहज कार्य नहीं है, विशेष कर जब ऐतिहासिक लिपियों' साक्ष्यों और चरित्रों की प्रामाणिकता का कोई ठोस आधार न हो। दुर्भाग्य से अपने देश में इतिहास की सदा उपेक्षा होती रही है। ऐतिहासिक अतीत को अतिरंजित ढंग से प्रस्तुत करने की आलंकारिक शैली के कारण विशुद्ध तथ्यमूलक घटनायें भी काल्पनिक और भ्रांतिमूलक सी लगती हैं। उनमें आरोपित क्षेपकों, व्यंजना और प्रतीकों को अलग कर दिया जायतो विशुद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का आधार मिल सकता है पर कोई ठोस और सर्वमान्य विभेदक मापदण्ड न होने के कारण यह कार्य इतना सरल नहीं हैं। ऐसी स्थिति में हमें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और साक्ष्यों के साथ अपनी नीर-क्षीर विभेदनी प्रज्ञा का आधार भी लेना होगा। महाभारत ऐसा ग्रंथ हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से उपादेय होते हुये भी शैली वैचित्र्य और आलंकारिता के कारण महाकव्योचित और काल्पनिक प्रतीत होता है। साथ ही भारतीय संस्कृति के विभिन्न विधाओं, वेद ज्योतिष, धर्म, दर्शन, स्मृति का समन्वय इसमें विश्वकोष का गांभीर्य भी भर देता है। यही कारण है कि इसका सम्यक अध्ययन निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति के पुरातन स्वरूप का उद्घाटन करने में सफल होगा इसमें कोई सन्देह नहीं है।

भारतीय वांग्मय एवं धर्म के प्रतिष्ठित देवता (रुद्र) का महाभारत में अध्ययन करने के पूर्व इसी जिज्ञासु-वृत्ति ने मुझे इधर उत्प्रेरित किया। मैंने अध्ययन में वर्णनात्मक स्वरूप की उपेक्षा करते हुए केवल अपना ध्यान विश्लेषणात्मक प्रसंगों पर ही केन्द्रित किया है एवं उन्हीं उद्धरणों एवं प्रसंग को यथावत उद्धरित किया है जिनके बिना उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता। वर्णनात्मक प्रसंग तो विज्ञ पाठक मूल महाभारत में भी पा सकते हैं। मेरा सदैव यही प्रयास रहा है कि अपने विश्लेषणों को सहज और बोधगम्य शैली में आप तक पहुँचा सकूँ। महाभारत में 'रुद्र' विषयक सामग्री को ऐतिहासिक धरातल देना और उसका तात्विक विवेचन ही मेरा अभीष्ट रहा है।

रुद्र समन्वय के देवता हैं और शैव मत इस समन्वय की विशिष्ट संस्था यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। महाभारत काल तक रुद्र विषयक लौकिक और दार्शनिक स्वरूप दीर्घकाल के सांस्कृतिक प्रभाव से उद्वेलित है। वैदिक

काल के कर्मकाण्डमय उपासना पद्धति से ऊबकर जन-मानस ने सरल और सहज पद्धति की खोज की। रुद्र के स्वरूप और शैवमत की उदार वृत्ति ने उसे अपनी ओर आकृष्ट किया एवं रुद्र लोग जीवन में प्रतिष्ठित होते गये।

महाभारत में शैव मत का विकास दूसरे मतों के साथ अन्तर्द्वन्द एवं वैष्णव शैव धर्म के समन्वय का इतिहास अत्यंत रोचक है। कालान्तर में शैव-मत ने अपनी उदार और सहिष्णुता–वृत्ति से एक व्यापक धर्म का रूप लेने में सफलता प्राप्त की।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैने अपना ध्यान निम्न क्षेत्रों पर केन्द्रित किया है।

(१) रुद्र विषयक नाम
(२) उत्पत्ति
(३) स्वरूप
(४) कथात्मक विकास
(५) धार्मिक प्ररिप्रेक्ष्य में शैव मत
(६) महत्व निरूपण।

रुद्र विषयक नाम महाभारत की किन-किन प्रसंगों में वर्णित है। उनका आधार और श्रोत क्या है ? आदि प्रसंगों के समाधान का प्रयास मैंने रुद्र विषयक नाम के अध्याय में किया है। इन नामों के विकास की परम्परा और काल निर्धारण आदि तत्वों पर विचार व्यक्त किया गया है। उत्पत्ति में रुद्र विषयक वैदिक कालीन उत्पत्ति एवं महाकाव्य काल तक रुद्र की उत्पत्ति आदि का विवेचन है। वैदिक काल से महाभारत काल तक परिवर्तित धारणा पर भी प्रकाश डाला गया है।

स्वरूप में रुद्र के लौकिक और दार्शनिक रूप की व्याख्या है। इसमें यह भी बताया गया है कि किस-किस प्रकार सर्वप्रथम प्राकृतिक शक्ति (विद्युत प्रकम्पन) आदि के प्रतीक और किस प्रकार उपनिषदों के चिन्तन और जन-सामान्य की आध्यात्मिक आकांक्षाओं ने रुद्र को श्रेष्ठतम और प्रसिद्धतम स्वरूप दिया। रुद्र के स्वरूप पर अग्नि, सोम, यम और मरुत आदि के नामों का प्रभाव भी विवेचित है। रुद्र के उग्र सौम्य स्वरूप की व्याख्या भी इसी संदर्भ में की गई है। रुद्र के लौकिक, लिंग एवं मूर्तियों (चतुर्मुख, त्रिमूख आदि) का दार्शनिक विवेचन भी हुआ है। उनके आयुध, आकृत एवं शिव-

महाभारत में रुद्र विषयक प्रकरणों के संदर्भ

वन पर्व–(१) अर्जुन के साथ शंकर का तपस्या के समय वार्तालाप, सूअर के शिकार के प्रसंग में शंकर जी से युद्ध और शंकर जी द्वारा अर्जुन को वरदान।

(२) राजा सागर द्वारा शिव जी से वरदान भगीरथ की तपस्या और शिव जी से वरदान।

(३) रुद्र का स्कन्ध के साथ भद्रवह की यात्रा।

(४) जयद्रथ के द्वारा भगवान शंकर की तपस्या और वरदान प्राप्त करना एवं स्वप्न में श्री कृष्ण और अर्जुन द्वारा शिव से दिव्य अस्त्र प्राप्त करना।

उद्योग पर्व–१–अम्बा का महादेव जी से वरदान प्राप्त करना।

द्रोण पर्व–२–व्यास द्वारा अर्जुन को शिव की महिमा बताना।

कर्ण पर्व -१–त्रिपुर विनाश में देवताओं द्वारा शंकर की प्रार्थना।

२–दुर्योधन द्वारा शल्य को शिवके विचित्र रथ का वर्णन सुनाना।

सौप्तिक पर्व१–श्री कृष्ण द्वारा युधिष्ठिर को भगवान शिव की महिमा बताना।

२–महादेव जी के कोप से जगत का विनाश और प्रसाद से पुनः पूर्ववत होना।

३–अश्वस्थामा द्वारा शिव की तपस्या और बरदान प्राप्त करना।

शान्ति पर्व–१–दक्ष यज्ञ विध्वन्स का प्रसंग।

२–ब्रह्मा और रुद्र का मिलन और सम्बाद।

३–श्रृंगाल और गिद्ध के नीति कथा प्रकरण में शंकर जी द्वारा मृत बालक को जीवित करना।

अनुशासन पर्व–१–शिव के तेज से संतप्त होकर गंगा का मेरुपर्वत छोड़ना।

२–नारद द्वारा शिव जी की शोभा का वर्णन।

३–उमा महेश्वर के सम्बाद में धार्मिक विषयों का विवेचन।

४–श्री कृष्ण द्वारा शंकर महात्म्य का वर्णन।

५–पिण्डदान में शिव का अंश।

अश्वमेधिक पर्व:–१–सम्वर्त की आज्ञा से मरुत द्वारा भगवान शिव और उनके पार्षदों की पूजा करके युधिष्ठिर का गड़ा धन निकलवाना।

हरिवंश विष्णु पर्व–१–श्री कृष्ण और वाणासुर के प्रकरण में शंकर जी से युद्ध एवं श्री कृष्ण और शंकर द्वारा एक दूसरे की स्तुति आदि।

हरिवंश भविष्य पर्व १–श्री कृष्ण द्वारा शंकर जी की कठोर तपस्या एवं शिव जी द्वारा प्रत्यक्ष होकर कृष्ण को वरदान देते हुये उनकी स्तुति।

द्रोण पर्व:—ब्रह्मा के कोख से मृत्यु की उत्पत्ति के विषय में शिव का प्रकरण।

सभा पर्व:—जरासंध के नरमेध यज्ञ में शिव का संदर्भ।

आदि पर्व—सागर मन्थन की कथा[1]।

---

[1] प्रस्तुत शोध कार्य में गीता-प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित महाभारत ग्रंथ का उपयोग किया गया है। अतएव उपरोक्त सभी सन्दर्भ तत्सम्बन्धित ग्रंथ से लिये गये हैं।

रुद्र विषयक संदर्भों की अनुसूची

संदर्भ ग्रन्थ:--

१—वैष्णव, शैव धर्म एवं अन्य धर्म — श्री रामाकृष्ण भण्डारकर
२—शैव मत — डा० यदुवंशी

रुद्र विषयक संदर्भ संकेत

१–ऋग्वेद–(मण्डल,१,२,३,४,५,६,७,८, के विभिन्न सूत्र)। २ अर्थववेद काण्ड १,२,३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३,१५,१८,१९ आदि । ३–यजुर्वेद (काण्ड, १,२, ३,८,६,१०,११,१६,१९,२४आदि) । ४ ब्राह्मण ग्रंथ (एतेरेय ब्राह्मण, कौशतकीय ब्राह्मण, तैतिरीय ब्राह्मण, जैमेनिय, ताण्ड या पंचविश आदि) ५–उपनिषद (बृद्धारण्यक केन उपनिषद, मैत्रायणि, श्वेताश्वतर आदि । ६– सूत्र ग्रंथ (शाश्वायन श्रोतसूत्र, लाट्टायन सूत्र, बौद्धायन सौत्र सूत्र, बौद्धायन गृह सूत्र आदि) ७—रामायण (बालकाण्ड, किष्किन्धा काण्ड, उत्तर काण्ड आदि) ८—पुराण (अग्नि पुराण, गरुण पुराण, नीलमत पुराण, ब्रह्मपुराण, ब्रह्मांड पुराण, मक्तव्य पुराण वाराह पुराण, मारकण्डेय पुराण और लिंग पुराण आदि ।

रुद्र : समन्वय के देवता के सम्बन्ध में

रुद्र समन्वय के देवता हैं। याज्ञिक कर्मकांड, आरण्यक कथाओं का विस्तार एवं उपनिषदों का तत्व चिंतन इन सब पर सनातन धर्म के देवाधिदेव रुद्र का वर्चस्व व्याप्त है। वे धर्म और ऋत के एकमात्र प्रतीक हैं। दिवोवाराह कपर्दिन और त्रयम्बक के रूप में रुद्र का वर्णन उनके तेज को व्यक्त करता है।

कर्मकांड और दार्शनिक मन्थन से रुद्र का सर्वथा नूतन स्वरूप उभर कर जन मानस को आप्लवित करता है। लोक भक्ति की पावन धारा में स्नात होकर अब रुद्र लिंग एवं मूर्ति पूजा के नानाविध लोकाभिराम स्वरूपों में अवतरित दीखते हैं।

दार्शनिक चिंतन की घटा और लोक मांगल्य की छटा के मध्य रुद्र का शिव स्वरूप प्रकट होता है। फिर शाक्त सम्प्रदाय आगम मार्ग (तंत्र मार्ग) चौंसठ योगनियों की सिद्धि, भैरवी साधना, गाणपत्य एवं स्कन्ध सम्प्रदाय, सांख्य एवं योग द्वारा निरूपित पाशुमत एवं कालमुख सम्प्रदाय आदि विभिन्न धारासे शैवमत से निकल कर जनमानस की श्रद्धा का स्पर्श करती है।

महाभारत में रुद्र के विकट एवं विलक्षण स्वरूप की बोधगम्य व्याख्या कथात्मक धरातल पर हुई है। शैवमत की आचार संहिता का वर्णन, वैष्णव एवं शैवमत के मध्य सन्तुलन का प्रयास एवं रुद्र के वैदिक स्वरुपों की प्रसंगानुकुल प्रतीकात्मक व्याख्या आदि को महाभारत में रुद्र की कतिपय विशेषताओं के रूप में देखा जा सकता है। महाभारत रुद्र का लोकप्रिय संस्करण है।

उपरोक्त पृष्ठभूमि में प्राच्य इतिहास एवं भारतीय संस्कृति के प्रखर अध्येता, सत्यप्रकाश ने 'रुद्र समन्वय के देवता' में रुद्र की सारगर्भित व्याख्या की है!

इस पुस्तक का प्रकाशन शोध छात्रों के ज्ञानार्जन की दृष्टि से किया गया है। लेखक का पारिश्रमिक या पुस्तक की बिक्री की आय से कोई संबन्ध नहीं है। लेखक ने शोध छात्रों के कल्याण की दृष्टि से पांडुलिपि का प्रकाशन अधिकार प्रकाशक को प्रदत्त किया है।—लेखक

9
@23:21 K1
KRI
1979 AD
दर्जे 1633.

वाल्मीकिविद्यापीठपुस्तकालयः

प्रत्यावर्तनतिथिः		

Acc. No 5223
Class No ... Book No ...
Author कृष्ण मेनन
Title महाभारत में ऋषि

Due on	Borrower's Name	Returned on

@23.21M.1
KRI
1979 A.D.

महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय
वाल्मीकि विद्यापीठ
पुस्तकालय